संसार में राजयोगी... एक नट की तरह...

नट जब रस्सी पर चलता है, नीचे खड़े लोग बहुत शोर मचाते हैं, वंस मोर, वंस मोर करते हैं। कोई उसकी तस्वीर खींचता है, कोई उसको उकसाता है और कोई उसकी करामात को बिगाड़ने की कोशिश करता है। फिर भी वो एक रस्सी पर चलते हुए, मुस्कुराते हुए अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ता हुआ कामयाबी को छू लेता है। अगर थोड़ा-भी उसका ध्यान इन सब चीज़ों पर गया तो वो अपने लक्ष्य से भटक जायेगा और असफल हो जायेगा। सब कुछ आस-पास होते हुए भी वो अपना ध्यान अपने संतुलन से हटाता नहीं है, इसीलिए वो कामयाब हो जाता है।

ठीक इसी तरह राजयोगी भी इस संसार में रहते हुए, कार्यव्यवहार में आते अपने सामाजिक, पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निभाते हैं, पर उनका ध्यान नट की तरह अपने लक्ष्य पर केन्द्रित रहता है। राजयोगी अपने सारे कारोबार को करते हुए भी अपना ध्यान परमात्मा पर टिका कर रखते हैं। उनके दिये हुए निर्देश और उनसे होने वाली प्राप्तियों के प्रति सम्पूर्ण ज्ञान उनके ज़हन में होता है। वो ये भलिभांति जानते हैं कि ये समय बहुत ही वैल्यूबल है। इसे यूं ही व्यर्थ नहीं गंवाना। दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते हुए भी उनकी बुद्धि की तार परमात्मा से जुड़ी रहती है। वे अच्छी तरह वाकिफ रहते हैं कि मुझे इस समय को झरमुई-झगमुई की बातों में नहीं गंवाना है।

ब्र.कु. गंगाधर

ज्ञान उनकी बुद्धि में ऐसे टपकता रहता है जैसे कि मंदिर में शिवलिंग पर जल की बूंदें, उससे वो अपने मन में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है। इस अतीन्द्रिय सुख के रस के सामने बाकी सब रस उन्हें फीके लगते हैं। परमात्म प्रेम में वे इतने ओत-प्रोत हैं जो दूसरे सब निरर्थक लगते हैं। इसी एकाग्रता के कारण वे मन और बुद्धि को साफ और स्वच्छ बनाकर सुख के झूले में झूलते हैं। कैसी भी परिस्थितियां आएं, कैसी भी मुश्किलातें हों, कैसी भी कठिनाई हो, पर वे एकरस की तल्लीन अवस्था को बनाए रखते हैं। अपने परिवार में भले ही अलग-अलग सदस्य के अपने-अपने विचार हैं, अलग-अलग सोच है, अलग-अलग कार्य करने के तरीके हैं, फिर भी वे उनसे घृणा या नफरत नहीं रखते। वे समझते हैं कि हरेक का पार्ट अपना-अपना है। वे अपना रोल अदा कर रहे हैं। जो स्क्रिप्ट जिसके लिए लिखी हुई है, वे यही तो कर रहे हैं। ये ज्ञान उनकी बुद्धि में स्पष्ट रहता है। समाज में, वातावरण में कई घटनायें हो रही हैं, शोर मचा हुआ है, परंतु वे नट की तरह अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते ही जाते हैं। आज देखें, घर में ही व घर से बाहर निकलते ही जैसे कि वातावरण इतना अशांत व असुरिक्षत है जो अपने मन को स्थिर करने में जद्दोजहद करनी पड़ती है। ऐसे वातावरण में राजयोगी जो राजयोग का अभ्यास दिल से करते हैं, कैसी भी परिस्थिति में बाबा(परमात्मा) के दिल का प्यार उन्हें हिम्मत देता है और बैक बोन की तरह उन्हें आगे बढ़ने का हौसला देता रहता है। वे तो बस इसी तरह से आगे बढ़ते जैसे मस्त चाल में चलता हाथी, भले ही कुत्ते भौंकते रहें या सब शोर मचाते रहें।

परमात्मा का कहना है कि अभी हमें वो सब कुछ प्राप्त कर लेना है जो दिल में ये कसक न रह जाये कि परमात्मा के मिलने के बाद भी मैं आत्मा अतृप्त रह गई। पाने का कुछ बाकी रह गया। इच्छायें अधूरी रह गईं। मैं आत्मा असंतुष्ट ही रही। तो हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमारे जीवन के सर्व बोझ स्वयं परमात्मा ने हर लिये हैं और उन्हों का कहना है कि बच्चे, जन्म-जन्म तुम बोझ ढ़ोते आये, अब सारा बोझ मुझे दे दो। मैं आपका पिता हूँ, इसी सम्बंध का लाभ उठाओ और आप बेफिक्र हो जाओ।

ये श्रावण मास दान-पुण्य करने का मास है। और ऊपर से बरसात की रिमझिम की भी सीज़न है। ऐसी भीगी-भीगी, सुगंधित हवाओं में हमें अपने मन को एकाग्र कर मनइच्छित फल प्राप्त कर लेना है। जहाँ परमात्मा का साथ हो, ऐसा सुंदर वातावरण हो, उसका लाभ उठाकर एकाग्रता की गुफा में बैठ अपने अंदर कोने-कोने में कमी-कमज़ोरी के छिपे हुए सूक्ष्म किटाणुओं को भी नष्ट करते हुए सम्पूर्णता की ओर तीव्रता से आगे बढ़ना है। याद रहे, आज का दिन कल नहीं लौटता। उसी तरह आज जो करना है, इसी वक्त करना है। टाल-मटोल का तकिया लेकर सुस्त नहीं हो जाना है। चुस्त और चौकन्ना रहकर परमात्म वरदानों से अपनी झोली भर लेनी है।

वेस्ट थॉट के इन पाँच गेट को बंद करो...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

"त्याग, तपस्या और वैराग्य", यह तीनों अगर हमारे जीवन में प्रैक्टिकल लाइफ में है, तो हम बाबा के समान बन जायेंगे क्योंकि हम सभी फलक से कहते हैं कि हमारा लक्ष्य है बाप समान बनना। तो जब हम सबका लक्ष्य है तो लक्षण भी ज़रूर धारण करेंगे, लेकिन होता क्या है? जब लक्षण धारण करने चलते हैं तो बीच-बीच में समस्यायें, कारण यह तो बनते ही हैं, और वो बनने ही हैं। मुरली में जब सुनते हैं कि बच्चे माया आयेगी और भिन्न-भिन्न रूप से तूफान लायेगी लेकिन आपको विजयी बनना है। जन्मते ही बाबा ने यह महामंत्र हमको दे दिया कि माया का काम है आना और आपका काम है उस पर जीत पाना। लेकिन... कहना माना कुछ किचड़ा ले लिया, इसलिए मम्मा कहती थी लेकिन नहीं कहो। कहो हाँ, करना ही है। और हमको विजयी बनना ही है, यह हमारा प्रॉमिस है बाबा से।

बाबा कहते आपको कौन-सी माला में आना है? विजयी रत्न बनना है तो विजयमाला में आना पड़ेगा। तो हम लोगों को यह समझ लेना चाहिए कि हमारे सामने यह जो विघ्न हैं, समस्यायें या कारण कहो भिन्न-भिन्न नाम हैं लेकिन यह सब हमारे पेपर हैं। हम समस्या समझते हैं... यह हो गया, वो हो गया, लेकिन मम्मा कहती थी उसे देख तुरन्त घबराओ नहीं। घबराने से हमारा निर्णय ठीक नहीं होता है, घबराने से हमारे मन-बुद्धि दोनों ही डगमग होते रहते हैं, कभी हाँ कहेंगे, कभी ना कहेंगे तो कभी क्या कहेंगे! इसलिए बाबा कहते समस्याओं में परेशान व हैरान नहीं हो करके यह सोचो कि हमको क्या करना है? भविष्य का सोचो, पास्ट का नहीं सोचो, यानी जो बात हो गई उसी बात को सोचते नहीं रहना। जो समस्या के निमित्त बनते हैं वो तो जाके आराम से सोये हुए होते हैं और हम क्या करते हैं! जो बात बीत गयी उसको ही सोचते रहते हैं, क्यों कहा या ऐसा क्यों किया? कैसे कहा? कब तक कहेगा? यह है कौन? यह कै-कै... में चले जाते हैं।

वेस्ट थॉट के यह पाँच गेट हैं- क्यों, क्या, कब, कैसे और कौन। तो जब हम कै कै करते हैं तो हम कौआ बन जाते हैं। तो कौआ नहीं बनना। जब तक यह पाँच कै कै निकलेंगे नहीं तब तक यह वेस्ट थॉट खत्म होंगे ही नहीं क्योंकि बीती हुई बात को हम सोच रहे हैं और जबकि बीती हुई बात हमारे हाथ में नहीं है। बीती बातों को बिलोना माना बाँहों का दर्द मिलेगा और कुछ नहीं मिलेगा। तो यह जो पाँच शब्द हैं इसे हमको बुद्धि में आने नहीं देना है, यह फाटक बन्द करना है, इससे व्यर्थ संकल्पों की शुरूआत होती है। इसीलिए बाबा कहते हैं मन-बुद्धि की एकाग्रता को बढ़ाओ, एकाग्रता होगी तो निर्णय ठीक होगा। गहन तपस्या के लिए भी एकाग्रता चाहिए। क्यों, क्या आ गया तो वेस्ट थॉट्स की रफ्तार बहुत तेज हो जायेगी। फिर उसको रोकना बहुत मुश्किल हो जाता है और एकाग्रता भी नहीं रहती। ऐसे में फिर समस्या से मुक्त होना चाहते हैं या फिर योग लगाने बैठो तो यहाँ से योग लग सकता है? इसीलिए बाबा कहता है पहले तो यह जो क्यों, क्या के फाटक हैं... उनको बन्द करो।

ऐसे गुणग्राही बनो जो मेरे को देख दूसरों का अवगुण चला जाये

राजयोगिनी दादी जानकी जी

जो सदा ही सुख-शांति में रहते हैं उसका सम्पन्न बनना पॉसिबल है। सम्पन्न माना सुख-शांति में सम्पन्न, सम्पत्तिवान। परिवर्तन माना अपने में सम्पूर्ण सम्पन्नता लाना। लौकिक दुनिया में कोई थोड़े होते हैं जो सम्पत्तिवान भी होते हैं परन्तु धर्मात्मा होते हैं, पुण्यात्मा होते हैं, लौकिक का कोई अभिमान नहीं होता। धर्मात्मा जो होते हैं, सच्ची दिलवाले बड़ी दिलवाले होते हैं। आप कौन हो? देवता बनने वाली आत्मा पहले धर्मात्मा बनती है। हर कर्म उनका श्रेष्ठ होता है। सफल करने में बहुत गुप्त होते हैं। तो प्रैक्टिकली अगर ऐसी जीवन बनती है ना, तो उसके लिए अति रिगार्ड होता है। शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा को निमित्त बना करके सिखाया है, वह प्रैक्टिकल कौन करता है? क्योंकि प्रैक्टिकल करने का प्रभाव बहुत होता है। तो गुणग्राही बनना माना गुण का ग्राहक बनना। मेरे को देख किसी का अवगुण चला जाये। ऐसे ऑफर करने वाले बाबा के फूल बच्चे बनो।

6-5-13(जयन्ती बहन ने दादी जी की क्लासेस से कुछ मुख्य बातें सुनाई) बुद्धि की एक्सरसाइज़ करने से बुद्धि छोटी या मोटी नहीं होगी। जब स्वच्छता हमारे अन्दर होती है। तब सत्यता हमारे अन्दर ठहर सकती है। इससे आत्मा को आनंद का अनुभव प्राप्त हो सकता। इस एक-एक बात की गहराई में जाओ तो बहुत सारी बातें निकल आती हैं। भगवान ही मेरा संसार है तो मेरे संस्कार भी भगवान समान बन सकते हैं। ज्ञान और योग का सार यही है कि हम सबके साथ ताल-मेल बना करके रखें, सबसे पहले तो हमारी स्थिति ऐसी हो जो हम औरों के साथ मिलजुलकर संगठन में एकरस स्थिति में रह सकूँ और संगठन को एकमत बनाकर रख सकूं।

इस चेहरे से,सूरत से बाप की सीरत दिखाने के निमित्त बनना है

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम सभी दुनिया के लिए लाइट हाउस हैं अथवा सर्चलाइट देने के निमित्त हैं। सर्चलाइट के बीच अगर कोई डिफेक्ट हो जाये तो सामने आने वाला जो शिप है, उसे सही रास्ता नहीं मिलेगा। हमारी मन्सा के सूक्ष्म संकल्प ऐसे हों जो चारों तरफ हमारे वायब्रेशन फैलें और दूसरों को प्रेरणा मिले। आकर्षण हो, साक्षात्कार हो। हम सभी ऐसे एक्ज़ाम्पल रहें, खुद को ऐसा समझें कि मैं जो कर्म करूँगा मुझे देख हरेक करेगा, तो इसके लिए हरेक जवाबदार है। जैसा मैं कर्म करूँगा मुझे देख सब करेंगे- यह सूक्ष्म की जवाबदारी हम सबके ऊपर है। हम जिस तरह भी अपनी स्थितियां रखेंगे ऐसी स्थिति का वायब्रेशन फैलेगा।

हम सबके हर संकल्प, हर कर्म में, हर वक्त बेहद ईश्वरीय परिवार की ज़िम्मेवारी है, सूक्ष्म वायब्रेशन से शक्ति देने की। तो हमारे कर्मों की गति बड़ी गहन है। प्यारे बाबा ने जो हमें श्रीमत दी है उसी श्रीमत पर हमें कदम बाय कदम चलना है। श्रीमत में बाबा ने कहा है कि तुम्हें श्रीमत है मर्यादा पुरुषोत्तम रहो। जितना हम मर्यादा पुरुषोत्तम बनेंगे उतना हमें देख दूसरे भी मर्यादा में रहेंगे इसलिए जैसे हमें मर्यादा में श्रीमत मिलती कि अमृतवेले उठकर बाबा की याद में रहना है, यह हम हरेक की ज़िम्मेदारी है। हमारी मर्यादा में ज्ञान सागर बाबा जो ज्ञान रत्नों की मुरली नित्य सुनाता है, उसे सुनना है, मनन करना है, यह हमारी मूल ज़िम्मेदारी है। अगर इस श्रीमत का पालन किसी भी कारण से नहीं करते तो यह भी अलबेलापन है, इसमें सूक्ष्म अपनी सुस्ती है। हम ऐसा मानती कि बाबा की श्रीमत पर चलने वाले के ऊपर आशीर्वाद है, दुआयें हैं, वरदान है। परन्तु अगर हम कदम-कदम श्रीमत पर नहीं चलते तो भगवान की दुआयें और वरदानों से मिस होते, दूसरा श्रीमत की अवज्ञा बहुत बड़ा सूक्ष्म पाप का भागी बनाती हैं। यह भी बोझ हो जाता है, जो बोझ अवस्थाओं को ऊंचा चढ़ने में विघ्न बनता है।

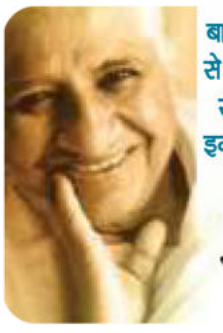

बाबा की श्रीमत है बच्चे मन-वचन-कर्म से सेवा करो। अगर हम मन-वचन-कर्म से सेवा नहीं करते हैं तो यह भी एक इनडायरेक्ट सेवा लेते हैं और उसका भी बहुत बोझ चढ़ता है।

बाबा की श्रीमत है बच्चे मन-वचन-कर्म से सेवा करो। अगर हम मन-वचन-कर्म से सेवा नहीं करते हैं तो यह भी एक इनडायरेक्ट सेवा लेते हैं और उसका भी बहुत बोझ चढ़ता है। जैसे कहा जाता है- आये हैं हम पुण्य कमाने लेकिन पुण्य कमाने के पीछे पुण्य की गंवाई हो जाती है। और फिर उसमें अपनी श्रीमत की धारणा नहीं रहती तो पुण्य के बदले पाप हो जाता है। फिर सूक्ष्म विकर्म विनाश नहीं होते तो मायाजीत भी नहीं बन सकते।

जैसे बाबा कहते तुम बच्चे किसी को दुःख न दो लेकिन यह मर्यादाओं का उल्लंघन करना भी सूक्ष्म दुःख देना है। इससे भी पुण्य के बदले पाप हो बोझ चढ़ता है इसलिए हमारे कर्मों की गति बड़ी गहन है। जो भी कर्म हम करते, सेवा करते, पालना करते, पालना लेते हरेक में बहुत बड़ी कर्मों की मशीनरी काम करती है। हमारे संग से दूसरे को भी श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा मिले। हमारा ऐसा संग न हो जो किसी को संगदोष लग जाए। और ही वह हमारे से ऊंच दृष्टि लेने के बदले नफरत, ईर्ष्या, द्वेष आदि में आये, उसमें रीस पैदा हो। करनी है रेस लेकिन हो जाती है रीस- उसी से बोझ चढ़ता है।

चलते-चलते बहुतों में देह अभिमान बढ़ता जाता है। एक होता है देह अभिमान, दूसरा होता है मैं पन का नशा। देह अभिमान फिर भी मोटा है लेकिन मैं पन का नशा बहुत सूक्ष्म है। चाहे अपनी बुद्धि का, चाहे अपनी सेवाओं का, चाहे किसी भी प्रकार का अगर नशा चढ़ता है तो वह नशा भी नुकसान करता है। नारायणी नशे के बदले देह अभिमान का नशा चढ़ गया तो बहुत नुकसान होता। कोई को भाषण का भी नशा चढ़ जाता, तो वह भी नहीं चढ़ना चाहिए, उससे भी बड़ा नुकसान होता।

नशे की निशानी है- 1. सूक्ष्म समझते हैं वाह रे मैं! 2. स्वयं को ही राइट समझते, दूसरों को नीचा समझते। वह कभी नम्रचित्त नहीं रह सकते। जो नम्रचित्त नहीं बनेगा वह निर्माण का काम भी नहीं कर सकेगा इसलिए हम सभी निमित्त हैं इस शब्द को कभी भूलो नहीं। हम निमित्त वालों को सदैव कदम-कदम पर सावधानी चाहिए। उठो, चलो, बैठो, खाओ, पियो, पहनो सब कर्मों की गति अपनी है इसलिए हर कदम में बहुत-बहुत ध्यान रखना ज़रूरी है।

बाबा के हम सभी बच्चे दर्शनीय मूर्त हैं। इस चेहरे से, सूरत से बाबा की सीरत दिखाने के निमित्त हैं। तो हम दर्शनीय मूर्त की धारणा कितनी श्रेष्ठ होनी चाहिए, कितनी महान होनी चाहिए यह हरेक खुद देख-सोच सकते हैं इसलिए जो भी कोई सूक्ष्म वृत्ति है उसको परिवर्तन करो।